XISS : जनजातीय उप-योजना का प्रदर्शन मूल्यांकन पर वर्कशॉप

रांची | जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस) में डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान (टीआरआई) के सहयोग से बुधवार को वर्कशॉप का आयोजन किया। इसका विषय जनजातीय उप योजना का प्रदर्शन मूल्यांकन : झारखंड : चुनौतियां और अवसर था। वर्कशॉप में अतिथियों का स्वागत एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ. जोसफ मारियनुस कुजूर एसजे ने किया। जनजातीय उप योजना के इतिहास के बारे में चर्चा करते हुए जानकारी दी। कहा कि शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय ने 1972 में प्रो. एससी दुबे की अध्यक्षता में गठित एक विशेषज्ञ समिति की सिफारिश के बाद जनजातीय उप योजना की स्थापना हुई थी। टीएसपी का उद्देश्य आदिवासियों के समग्र सामाजिक-आर्थिक विकास की देखभाल करना और उन्हें गरीबी स्तर से ऊपर उठाना और आदिवासियों को विभिन्न प्रकार के शोषण से बचाना था। इससे पहले मार्केटिंग मैनेजमेंट कार्यक्रम के प्रमुख डॉ. भवानी प्रसाद महापात्रा ने कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। आईएएस अजयनाथ झा, वरिष्ठ अर्थशास्त्री डॉ. जावेद आलम खान व डॉ. नेहा प्रसाद ने संबंधित विषय पर प्रकाश डाला।

PRESS : DAINIK BHASKAR

एक्सआइएसएस में टीएसपी के विकास और संवर्धन पर विमर्श

रांची. एक्सआइएसएस रांची में बुधवार को विषय "झारखंड की जनजातीय उप-योजनाओं का प्रदर्शन एवं मूल्यांकन : चुनौतियां और अवसर" पर कार्यशाला हुई. डॉ रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान (टीआरआइ) के सहयोग से आयोजित कार्यशाला में टीएसपी (ट्राइबल सब एरिया प्लान) के प्रभाव को विकसित करने पर चर्चा हुई. कार्यशाला में ब्यूरोक्रेट, शिक्षाविद और जनजातीय विषय के विशेषज्ञ शामिल हुए. निदेशक डॉ जोसफ मरियानुस कुजूर एसजे ने बताया कि जनजातीय उप-योजनाएं आदिवासी समाज के सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए तैयार की जाती रही हैं. शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय ने 1972 में प्रो एससी दुबे की अध्यक्षता में टीएसपी की स्थापना की थी. टीएसपी के जरिये आदिवासियों के समग्र विकास, गरीबी स्तर से उन्हें उठाने और शोषण से बचाना था. राज्य में टीएसपी के कार्यान्वयन को मजबूती मिले और सटीक रोडमैप तैयार हो इसके लिए विचार करना जरूरी है. मार्केटिंग मैनेजमेंट प्रोग्राम के प्रमुख डॉ भबानी प्रसाद महापात्रा ने झारखंड में टीएसपी रणनीति की चुनौतियों को साझा किया. वहीं, अजयनाथ झा ने नोडल एजेंसी की भूमिका पर अपने विचार साझा किये. इस अवसर पर पीएचआइए फाउंडेशन के निदेशक जॉनसन टोपनो के साथ टीएसपी की चुनौतियों और उनके हल पर चर्चा हुई. सीबीजीए नयी दिल्ली के वरिष्ठ अर्थशास्त्री डॉ जावेद आलम खान ने राज्य के प्रत्येक जिलों में टीएसपी फंड के आवंटन और उनके सही उपयोग की जानकारी दी. डॉ नेहा प्रसाद ने विभिन्न परियोजना से आदिवासी विकास के भविष्य को साझा किया.

PRESS : PRABHAT KHABAR

एक्सआईएसएस में 'झारखंडः चुनौतियां और अवसर' पर कार्यशाला का आयोजन

टीएसपी का उद्देश्य आदिवासियों का विकास करना : डॉ जोसफ

रांची, प्रमुख संवाददाता। जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस) में डॉ रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान (टीआरआई) के सहयोग से बुधवार को आदिवासी उप-योजना (टीएसपी) का प्रदर्शन मूल्यांकन 'झारखंडः चुनौतियां और अवसर' विषय पर परामर्शी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें टीएसपी के प्रभाव मूल्यांकन के लिए एक मजबूत और प्रभावी ढांचा विकसित करने पर अपनी विशेषज्ञता और अंतर्दृष्टि साझा करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों, शिक्षाविदों और विषय विशेषज्ञों को एक साथ लाने के लिए एक मंच प्रदान किया गया।

इसकी शुरुआत करते हुए एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर ने जनजातीय उप-योजना के इतिहास के बारे में चर्चा की, जिसे जनजातीय लोगों के लिए तेजी से सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए एक पहल के साथ स्थापित किया गया था। उन्होंने कहा कि शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय ने 1972 में प्रो एससी दुबे की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति की सिफारिश के बाद जनजातीय उप-योजना की स्थापना की थी। टीएसपी का उद्देश्य आदिवासियों के समग्र सामाजिक-आर्थिक विकास की देखभाल करना और उन्हें गरीबी स्तर से ऊपर उठाना और आदिवासियों को विभिन्न प्रकार के शोषण से बचाना था।

वर्तमान की प्रथाओं और चुनौतियों पर की चर्चा

डॉ कुजूर ने बताया कि कार्यशाला के माध्यम से टीएसपी फंड प्रवाह के तंत्र को समझने, मौजूदा कार्यान्वयन रणनीतियों और चुनौतियों की जांच करने और झारखंड में टीएसपी कार्यान्वयन को मजबूत करने के लिए रोडमैप का पता लगाने के लिए किया गया है। मार्केटिंग मैनेजमेंट के प्रमुख डॉ भवानी प्रसाद महापात्रा ने कार्यशाला की भूमिका पर बात की। झारखंड में टीएसपी रणनीति में वर्तमान प्रथाओं और चुनौतियों और नोडल एजेंसी की भूमिका और निहितार्थ पर जनजातीय आयुक्त अजय नाथ झा ने चर्चा की।

मारवाड़ी कॉलेज में तीन कंपनियों का होगा कैंपस ड्राइव, आवेदन शुरू, प्लेसमेंट सेल में दें बायोडाटा

रांची। मारवाड़ी कॉलेज प्लेसमेंट सेल की ओर से स्नातक और स्नातकोत्तर अंतिम सेमेस्टर (2021-24) और उत्तीर्ण कर चुके विद्यार्थियों के लिए तीन कंपनियों का कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव होने जा रहा है। पहली रिक्ति आईसीआईसीआई प्रूडेशियल में ग्रेजुएट ट्रेनी (सीटीसी 2.85 लाख रुपये वार्षिक) की है। इसके लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू हो गई है, इच्छुक अभ्यर्थी 8 फरवरी तक आवेदन कर सकते हैं। दूसरी रिक्ति कॉन्सेंट्रिक, रांची के लिए है। यह वाइस और नन वाइस डोमेस्टिक और इंटरनेशनल सपोर्ट के लिए होगा (सीटीसी 2-2.28 लाख रुपये वार्षिक)। इसके लिए आवेदन प्रक्रिया जारी है। छात्र-छात्राएं 6 फरवरी तक आवेदन कर सकते हैं। तीसरी रिक्ति बजाज एलायंस की है। इसमें पोस्ट इंटरनल रिटेल पार्टनर पद के नियुक्ति की जाएगी, वेतन 19 हजार रुपये प्रति माह होगा। इसमें आवेदन की तिथि 7-10 फरवरी तक है। इच्छुक विद्यार्थी प्लेसमेंट सेल की कार्यालय सहायक रीता सिंह के पास बायोडाटा किसी भी कार्यदिवस में दिन के 11:30 से 1:30 तक जमा कर सकते हैं।

PRESS : HINDUSTAN

Consultative Workshop organized at XISS

PNS : RANCHI

Xavier Institute of Social Service (XISS), Ranchi, in association with Dr Ramdayal Munda Tribal Welfare Research Institute Jharkhand (TRI), Jharkhand organized a consultative workshop on "Performance Evaluation of Tribal Sub-Plan (TSP): Jharkhand: Challenges and Opportunities" on Tuesday. This workshop provided a platform to bring together senior bureaucrats, academicians, and subject experts, to share their expertise and insights on developing a robust and effective framework for TSP impact assessment. The welcome note was delivered by Dr Joseph Marianus Kujur, Director, XISS wherein he welcomed everyone to the workshop. He discussed the history of Tribal Sub-Plan which was established with an initiative for rapid socio-economic development of tribal people, the Ministry of Education and Social Welfare had set up Tribal Sub-Plan, after recommendation of an Expert Committee under Chairmanship of Prof. S.C. Dube in 1972. The aim of TSP was to look after the over-all socio-economic development of tribals and to raise them above poverty level, and protect tribals from various forms of exploitation.

Dr Kujur informed about the purpose of the workshop and mentioned it to enable understanding the mechanism of the TSP fund flow, examine the existing implementation strategies & challenges, and to explore the roadmap for strengthening TSP implementation in Jharkhand.

Earlier, in the event, Dr Bhabani Prasad Mahapatra, Head, Marketing Management Programme set the tone of the workshop. The Current Practices and Challenges in TSP Strategy in Jharkhand & Role and Implications of the Nodal Agency were discussed by Ajay Nath Jha, IAS, Tribal Commissioner, Jharkhand. The Challenges in TSP & the Way Forward were discussed by Johnson Topno, Director Programmes, PHIA Foundation.

Meanwhile, Allocation & Distribution of TSP Funds among all Districts and their Utilisation was discussed by Dr Jawed Alam Khan, Senior Economist, CBGA, New Delhi during the work. Dr Neha Prasad, Research Associate, TRI gave a future roadmap for the project.

The workshop went ahead with an Open House and concluded with a valedictory session.

PRESS : PIONEER

SOCIAL NEWS SEARCH

जल्द आ रहा है आपका
नया अखबार

एक्सआईएसएस में परामर्शी कार्यशाला का आयोजन किया गया

राँची

January 31, 2024 Social News Search

Leave A Comment

रांची : जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस), रांची ने डॉ रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान (टीआरआई), झारखंड के सहयोग से मंगलवार को "आदिवासी उप-योजना (टीएसपी) का प्रदर्शन मूल्यांकन: झारखंड: चुनौतियां और अवसर" विषय पर एक परामर्शी कार्यशाला का आयोजन किया. इस कार्यशाला ने टीएसपी के प्रभाव मूल्यांकन के लिए एक मजबूत और प्रभावी ढांचा विकसित करने पर अपनी विशेषज्ञता और अंतर्दृष्टि साझा करने के लिए वरिष्ठ नौकरशाहों, शिक्षाविदों और विषय विशेषज्ञों को एक साथ लाने के लिए एक मंच प्रदान किया.

स्वागत नोट एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे द्वारा दिया गया

स्वागत नोट एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे द्वारा दिया गया, जिसमें उन्होंने कार्यशाला में सभी का स्वागत किया. उन्होंने जनजातीय उप-योजना के इतिहास के बारे में चर्चा की, जिसे जनजातीय लोगों के लिए तेजी से सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए एक पहल के साथ स्थापित किया गया था. शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय ने 1972 में प्रोफेसर एस.सी. दुबे की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति की सिफारिश के बाद जनजातीय उप-योजना की स्थापना की थी. टीएसपी का उद्देश्य आदिवासियों के समग्र सामाजिक-आर्थिक विकास की देखभाल करना और उन्हें गरीबी स्तर से ऊपर उठाना और आदिवासियों को विभिन्न प्रकार के शोषण से बचाना था.

डॉ कुजूर ने कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी

डॉ कुजूर ने कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी और बताया कि इस कार्यशाला के माध्यम से टीएसपी फंड प्रवाह के तंत्र को समझने, मौजूदा कार्यान्वयन रणनीतियों और चुनौतियों की जांच करने और झारखंड में टीएसपी कार्यान्वयन को मजबूत करने के लिए रोडमैप का पता लगाने के लिए किया गया है.

इससे पहले, कार्यक्रम में, मार्केटिंग मैनेजमेंट कार्यक्रम के प्रमुख डॉ भबानी प्रसाद महापात्रा ने कार्यशाला की भूमिका को निर्धारित किया. झारखंड में टीएसपी रणनीति में वर्तमान प्रथाओं और चुनौतियों और नोडल एजेंसी की भूमिका और निहितार्थ पर श्री अजय नाथ झा, आईएएस, जनजातीय आयुक्त, झारखंड द्वारा चर्चा की गई. टीएसपी में चुनौतियों और आगे की राह पर पीएचआईए फाउंडेशन के निदेशक कार्यक्रम, श्री जॉनसन टोपनो द्वारा चर्चा की गई.

इस बीच, कार्य के दौरान सीबीजीए, नई दिल्ली के वरिष्ठ अर्थशास्त्री डॉ जावेद आलम खान द्वारा सभी जिलों के बीच टीएसपी फंड के आवंटन और वितरण और उनके उपयोग पर चर्चा की गई. डॉ नेहा प्रसाद, रिसर्च एसोसिएट, टीआरआई ने परियोजना के लिए भविष्य का रोडमैप दिया. कार्यशाला में आयोजित ओपन हाउस में सवालों के जवाब दिए गए और समापन सत्र के साथ कार्यशाला समाप्त हुई.

PRESS : SOCIAL NEWS SEARCH